ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 122-125

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

बच्चों में समृद्ध होने के लिए पूरा प्रयास– कारण और उपचार

Ideal Upbringing To Eliminate Problem In Children- Its Causes & Treatment

Babita Kumari

Ramgharia, P.O- Ara, Dist- Bhojpur. Pin-802301 (Bihar) India.

सारांश : प्रत्येक मानव समाज में समाज की व्यवस्था और सदस्यों की सुरक्षा को बनाए रखने के लिए कुछ नियम और कानून होते हैं। प्रत्येक बालक की आनुवंशिकता और वातावरण एक–दूसरे बालकों के समान नहीं होते हैं। इस असमानता के कारण ही बालकों के शारीरिक, मानसिक तथा अन्यप्रकार के गुणों में सार्थक भिन्नता पाई जाती है। किसी भी समूह, समाज या देश में देखा जा सकता है कि कुछ बालकों में समूह प्रतिमानों की अपेक्षा अधिक गुण पाए जाते हैं तथा कुछ ऐसे बालक भी होते हैं जिनमें यह गुण समूह प्रतिमानों की अपेक्षा अधिक या कम गुण पाए जाते हैं, उन्हें विशिष्ट बालक कहते हैं।

कुंजीभूत शब्द– व्यवस्था और सदस्यों, नियम और कानून, आनुवंशिकता, वातावरण, असमानता, मानसिक।

विशिष्ट बालकों को परिभाषित करते हुए यह कहा जा सकता है कि विशिष्ट बालक वे हैं, जिनमें समूह प्रतिमानों की अपेक्षा अधिक या कम मात्रा में गुण पाए जाते हैं। ये गुण उनकी बुद्धि, शारीरिक, सामाजिक व्यवहार, समायोजन, संवेग, भाषा आदि किसी भी एक या अधिक क्षेत्रों से संबंधित हो सकते हैं।"

आजकल विकासशील और विकसित देशों में न्यूक्लियर परिवार ही अधिक लोकप्रिय हो रहा है।पूरी दुनिया में मौजूद बच्चों में से तीन प्रतिशत बच्चे असाधारण तथा विशिष्ट होते हैं वे अपनी विशिष्ट क्षमताओं अथवा खुबियों के साथ जीवन की मुख्य धारा में शामिल होते हैं। ये सामान्य बालकों से अलग होते हैं, इसलिए इन्हें विशिष्ट या असाधारण या अपवादात्मक बालकों की संज्ञा दी जाती है।

स्पष्ट है कि विशिष्ट बालकों में सामान्य बालकों से अलग कुछ ऐसेसकारात्मक अथवा नकारात्मक गुण होते हैं, जिसके चलते वे स्वतः ही दूसरों काध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। विशिष्ट बालकों की मुख्यतः पाँचश्रेणियाँ होती हैं

1. प्रतिभाशालीबालक (Gifted Children)
2. पिछड़ेबालक (Backward Children)
3. मंदबुद्धिबालक (Mentally Retarded Children)
4. समस्यात्मकबालक (Problem Children)
5. अपराधीबालकअथवाबाल–अपराधी (Child De linquency)

उपरोक्त पाँचों श्रेणी के बालक सामान्य बालकों की तुलना में विकास के दृष्टिकोण से थोड़ा आगे एवं पीछे होते हैं। अतः इन्हें प्रत्येक क्षेत्र में विशिष्ट पालन–पोषण की आवश्यकता होती है।

कभी–कभी कुछ बच्चे ऐसे भी देखने को मिलते हैं, जो बात–बात पर अपने साथियों, अभिभावकों या शिक्षकों से बुरी तरह उलझ पड़ते हैं, विद्यालय केअनुशासन को जानबूझकर तोड़ते रहते हैं और बेवजह दूसरों पर धौंस जमाते रहते हैं, उन्हें समस्यात्मक बालक की श्रेणी में रखा जाता है। स्पष्टतः ऐसे बालकों का व्यवहार एवं समायोजन सामान्य बालकों से काफी भिन्न होता है।

कॉफमैन के शब्दों में– "समस्यात्मक बालक उन बालकों को कहा जाता है, जो अपने वातावरण के प्रति सामाजिक रूप से अस्वीकार्य ढंग से या व्यक्तिगत रूप से असन्तोषजनक तरीकें से स्पष्ट ढंग से लम्बे अरसे से अनुक्रिया करते हैं, परन्तु जिन्हें सामाजिक रूप से स्वीकार्य तथा व्यक्तिगत रूप से सन्तुष्टि देने वाले व्यवहार को सिखलाया जा सकता है।"

समस्यात्मक बालक किसी वर्ग विशेष के नहीं होते बल्कि ये किसी भी परिवार में हो सकते हैं, इनमें न तो जन्मजात कोई शारीरिक या मानसिक हीनता होती है और न ही ये अपराधी या समाज विरोधी प्रकृति के होते हैं। सामान्य बालक ही जब वातावरण के साथ समायोजन नहीं कर पाते हैं, तो समस्यात्मक बन जाते हैं। बालक के समायोजन के दौरान परिस्थितियाँ जब अत्यन्त जटिल हो जाती है तो उनके इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती है, उन्हें वात्सल्य प्रेम नहीं मिलता तो बच्चे जिद्दी हो जाते हैं।

परिवार में नए बच्चों के उत्पन्न होने का अन्तर भी अभिन्नात्मक बालक सम्बन्धों को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है।

हरलॉक के कथनानुसार– Because of the widespread belief that only children are pampered and spoiled] it has generally been accepted that there are more instances of problem behaviour among them than

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

among non&only childrenß

छोटे परिवारों में अभिभावक अपने बच्चों के साथ अधिक समय देते हैं। बच्चों को समान और अधिक सुविधाएँ मिलने की सम्भावना होती है। अतः इसबात को सम्भावना होती है कि अभिभावक और बच्चों का सम्बन्ध मधुर रहे।

समस्यात्मक बालक की विशेषताएँ–

माता–पिता, शिक्षकों तथा समाज के व्यक्तियों के लिए यह जानना एक कठिन कार्य है कि बालक समस्यात्मक है। यदि सामान्य बालक की प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रभावस्वरूप समस्यात्मक बालक बन जाते हैं।

बर्च (Birch), कमिंग्स (Cummings), हेण्डरसन (Henderson) आदि मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि कुछ बालकों का व्यवहार ऊपर से तो देखने में समस्यात्मक वाला व्यवहार लगता है, लेकिन वैसा कुछ होता नहीं है बल्कि यह उम्र बढ़ने के साथ–साथ समाप्त हो जाता है। अतः इन मनोवैज्ञानिकों ने आपसी सहमति के आधार पर समस्यात्मक बालक की पहचान हेतु दो प्रमुख लक्षणों पर विशेष बल दिया है–

(1) यदि बालक में मौजूदा समस्यात्मक व्यवहार के लक्षण ऐसे हैं जिनसे उसके समायोजन की क्षमता बुरी तरह प्रभावित होती हो तथा,

(2) यदि वेलक्षण बालकों में लम्बे समय से चले आ रहे हो अर्थात उनका स्वरूप चिरकालिक हो।

वैज्ञानिकों ने सराहनीय और प्रमाणिक अध्ययन किए तथा उनके आधार पर समस्यात्मक बालकों की निम्नलिखित विशेषताएं बताई है–

1. अनुशासनहीन होना
2. अश्लील व्यवहार करना
3. झूठ बोलना
4. चोरी करना
5. बेचौन रहना
6. जिद करना
7. क्रोध करना
8. ईर्ष्यालु होना
9. लापरवाह होना
10. अप्रसन्न रहना
11. कक्षा से भागना
12. लड़ाई–झगड़ा करना
13. आज्ञा न मानना
14. दूसरों को चिढ़ाना
15. समाज से भागना
16. बीड़ी–सिगरेट पीना इत्यादि।

बालकों पर किए अध्ययनों के पश्चात् अनेकों प्रकार के समस्यात्मक बालकों का पता चलता है। जैसे– चोरी करने वाले, झूठ बोलने वाले, सम्मान न करने वाले, समय नष्ट करने वाले, जिद्दी, ईर्ष्यालु, विध्वंसकारी आदि।

बालकों में विभिन्न प्रकार की समस्याओं को देखते हुए तीन भागों में बाँटागया है–

- मनोशारीरिक समस्या तम्क बालक।
- संवेगात्मक समस्यात्मक बालक
- अनुशासन विहीन समस्यातम्क बालक।

कारण चाहे कोई भी हो– छोटा या बड़ा, गम्भीर या बचकाना, बच्चे के साथमिल–बैठकर उसपर आपस में बात कर बाल मन की भावनाओं को समझने की कोशिश कर उन्हें यथासम्भव सुधारने का प्रयास करना चाहिए। इस दौरान इस बात का ध्यान भी रखना जरूरी है कि बच्चों के कोमल मन की भावनाओं को ठेस न पहुंचे।

Causes of Problem in children (समस्यात्मक बालकों के कारण)– बालकों में विभिन्न प्रकार के समस्यात्मक व्यवहार पाए जाते हैं, जिनके मूल में अनेकों कारण होते हैं, जो हमारे परिवार व समाज द्वारा उत्पन्न होते हैं और समायोजन में बाधक होते हैं। इन्हें हम सामान्यतः निम्न कारणों द्वारा समझ सकते हैं–

1. कलहपूर्ण पारिवारिक वातावरण जहाँ माता–पिता में परस्पर लड़ाई–झगड़ा होता है वहाँ बच्चों का स्वस्थ विकास नहीं होता है तथा वे मानसिक रूप से भी अस्वस्थ होते हैं।
2. यदि माता–पिता नौकरी या अन्य किसी कारणों से अधिक समय तक घर से बाहर रहते हैं तो बालक स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं, जिस कारण वह गलत रास्ते पर चले जाते हैं।
3. यदि माँ या पिता सौतेले हो, पिता शराबी अथवा लापरवाह हो या फिर माता–पिता के अन्यत्र अनैतिक सम्बन्ध हों तो बच्चों में कुण्ठा विकसित हो जाती है।
4. जब माता–पिता अपनी सभी सन्तानों को समान प्यार–दुलार और सुविधाऐंनहीं दे पाते हैं तो बालकों के व्यवहार में समस्याएँ पैदा हो जाती हैं वह झगडालू व जिद्दी प्रवृत्ति के हो जाते हैं।
5. जिन बच्चों को अपने माता–पिता या अभिभावकों से आवश्यकता से अधिक लाड़–दुलार मिलता है, उनमें भी समायोजन की तीव्र एवं कटु समस्या उत्पन्न हो जाती है, जो उन्हें एक समस्यात्मक बालक बनने में मदद करती है।
6. घरेलू अनुशासन की कठोरता या ढीलापन दोनों ही बालों को समस्यात्मक बालक बनाने में मदद करते हैं।
7. परिवार का निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तर भी बच्चों को

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

समस्यात्मक बालक बनाने में सहायक सिद्ध होता है। ऐसे परिवारों में अधिकतर बच्चों की जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है जिससे उन्हें निराशा, कुण्ठा, चिन्ता आदि नकारात्मक भावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

विद्यालय का अनुपयुक्त वातावरण भी बालकों को समस्यात्मक बनाता ळे य जो निम्नप्रकार से नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

- दोषपूर्णपरीक्षापद्धति
- अनुपयुक्तपाठ्यक्रम
- दोषपूर्णशिक्षापद्धति
- कठोरअनुशासन
- गलतसहपाठी

शारीरिक अयोग्यताऐं – कुछ बालकोंमें समस्यात्मक व्यवहार का कारण उनकी शारीरिक अक्षमता या शारीरिक अयोग्यता होती है। जैसे– अधिकलम्बा, मोटा, नाटा, बौना, लंगड़ा, लूला, अन्धा, बहरा आदि। इन दोषों के कारण अन्य लोगों द्वारा उनकी खिल्ली उड़ाई जाती है या कहे कि उनका उपहास या मजाक बनाया जाता है जिसके कारण वे कहीं भी समूह में सम्मिलित नहीं हो पाते और ऐसे बालकों में संवेगात्मक तनाव उत्पन्न हो जाता है। ऐसे में उन बच्चों के व्यक्तित्व पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिसके फलस्वरूप उनमें अवांछित एवं असामाजिक व्यवहारों की प्रबलता देखने को मिलती है।

बुद्धि–बुद्धि की कमीया अधिकता दोनों ही समस्यात्म क बालक को जन्म देती है। दोनों ही स्थितियों में बालक सामान्य बालकों के साथ समायोजन स्थापित करन `में असमर्थ होता है और उनका व्यवहार समस्यात्मक बन जाता है।

Treatment of Problem in children (समस्यात्मक बालकों का उपचार या समायोजन)– समस्यात्मक बालकों को सुधारने में अनेक सुधारात्मक विद्या यॉ सहायक सिद्ध हुई हैं–

1. प्रेम व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार– अक्सर यह देखा जाता है कि मनोशारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर बालक समस्यात्मक बन जाते हैं। बालकों को सुध ारने के लिए आवश्यक है कि उनके साथ प्रेम व सहा नुभूतिपूण व्यवहार किया जाए तथा उनकी हर बात को सुनकर उन्हें प्यार से समझाना चाहिए।

2. दया हैं मूल प्रवृत्तियों का शोध किया जाए– जब इच्छाओं का दमन होता है तो बालकों में समस्यात्मक व्यवहार उत्पन्न हो जाता है। अतः खेल, मनोरंजन, भ्रमण तथा मनोचिकित्सा द्वारामूल प्रवृत्तियों का शोधन किया जाना चाहिए तथा यह ध्यान रखना चाहिए कि बालकों या बच्चों के इच्छा का दमन न हो।

3. अतिरिक्त कार्य– समस्यात्मक बालकों को अतिरिक्त कार्य देकर यदि उसे व्यस्त रखा जाए तो वह उदण्ड व्यवहार नहीं कर पाते हैं। अतिरिक्त कार्य देते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि कार्य उनकी रूचि का होना चाहिए। इसके साथ उन्हें सामाजिक व रचनात्मक कार्यों में भी लगाया जाना चाहिए।

4. परामर्श– बालक की आयु और बुद्धिके अनुसार उसे समझाना चाहिए। परिवार में बालक का जिस व्यक्ति से उसे ज्यादा लगाव रहता है तो बालक उसी व्यक्ति के परामर्श या सलाह को ठीक समझते हुए उनके बताए हुए सुझावों को शीघ्रग्रहण करता है।

5. स्वस्थ आलोचना – स्वस्थ आलोचना से तात्पर्य है कि बिना कठोर दण्ड और डांट–फटकार। इससे बच्चे उदण्ड हो जाते हैं, लेकिन समय–समय पर इसकी भी जरूरत पड़ती है जो बालक को अनुशासित भी बनाता है। ये काम भी बिना आलोचना के स्वच्छ ढंग से कर बच्चों के व्यक्तित्व को सुधारने में मदद मिलती है।

6. मार्ग–दर्शन– समस्यात्मक बालकों का परिवार और विद्यालय में मार्ग–दर्शन करते रहना च ाहिए। माता–पिता तथा शिक्षकों द्वारा बालक के प्रशनों का तथा जिज्ञासाओं का समाधान करते रहना चाहिए। उन्हेंव्यक्तिगत, शैक्षिक और व्यवसायिक निर्देशन आवश्यकता अनुसार देकर उसकी समस्या को सुधारने और जीवन में आगे बढ़ने में मदद करनी चाहिए।

7. शिक्षक और अभिभावक समय–समय पर सम्पर्क करें–इसतरह के बालकों के सुधार के लिए यह भी आवश्यक है कि अभिभावक बालक के शिक्षक से समय–समय पर मिलकर अपने बच्चों को सुधारने के उपाय पूछते रहें। वे एक–दूसरे से बालक व्यवहार के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करें क्योंकि बालक शि क्षक व माता–पिता के साथ ही ज्यादा समय बिताता है वे दोनों से बेहतर बालक के गतिविधि को कोई नहीं जान सकता है इसलिए कहते हैं कि समस्यात्मक बालक को सुधारने में शिक्षक व अभिभावक, माता–पिता सब महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

8. पुरस्कार–समस्यात्मक बालक को सुधारने के लिए आवश्यकतानुसार समय–समय पर पुरस्कार देकर बालक के आत्मविश्वास में वृद्धिकरने का प्रयास करते रहना चाहिए।

9.स्वस्थ मनोरंजन की व्यवस्था– पढ़ाई के साथ–साथ मनोरंजन भी आवश्यक है ताकि खाली समय का सदुपयोग हो सके। कहा जाता है "खाली दिमाग शैतान

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

का घर" घर एवं विद्यालय के अन्दर उनके रूचि के अनुसार खेल खेलें, अच्छी साहित्य व पत्र–पत्रिकाएँ पढ़ने को दें या फिर कभी–कभी घुमने या पिकनिक मनाने के लिए घर या विद्यालय से बाहर ले जाएँ ताकि उनका मनोरंजन हो और मन लगा रहे। ऐसे बालकों को सुधारने के लिए उनको व्यस्त रखना जरूरी है।

10. धर्म व नैतिकता की शिक्षा– प्रत्येक धर्म के अपने कुछ सिद्धान्त व आदेश होते हैं, जो बच्चों के अच्छे चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं। माता–पिता तथा शिक्षकों को चाहिए कि वे बालकों को धार्मिक व नैतिक शिक्षा देकर उनमें उच्चपदों का निर्माण करें। जिसके कारण बालकों में धर्म के प्रति भी रूचि जागे।

11. शारीरिक विकारों को कम करने के लिए सुविधाएँ दी जाएँ–शारीरिक रूप से अक्षम बालक हीनता का शिकार होकर समस्यात मक बन जाते हैं। इनके शारीरिक विकारों को कम करने के लिये आवश्यक सुविधाएँ प्रदान की जाएँ ताकि बालक उसे भूलकर कुछ सहज महसूस कर सकें।

12. स्वस्थ एवं अनुकूल शैक्षणिक वातावरण– समस्यात्मक बालकों के समुचित समस्योजन हेतु यह जरूरी "कि उनके स्कूल का वातावरण तथा पाठ्यक्रम बालक की बुद्धि, योग्यता तथा रूचि के अनुकूल होना चाहिए जिससे पढ़ाई में उन का मन लगा रहे। विद्यालय का वातावरण सही होने से बाल क अपनी इच्छाओं एवं कठिनाइयों को खुलकर शिक्षक छात्र के समक्ष अभिव्यक्त कर सकें। शिक्षकों को भी चाहिए कि वे जातीयता, पक्षपात, तरफदारी आदि जैसी बुराइयों से ऊपर उठकर बच्चों के साथ समान व्यवहार करें।

समस्यात्मक बालकों के बुद्धि–स्तर को ध्यान में रखते हुए ऐसी अध्यापन विधियो जिसमें शिक्षक विषय–वस्तु या पाठ्यक्रम में छात्रों की उचित अभिरूचि एवं प्रेरणा बनी रहे।

इसके अलावा, ऐसे बालकों का बुद्धि–स्तर कि औसत स्तर का होता है, इसलिए ऐसे बालकों हेतु अलग से पाठ्य क्रम का निर्माण करके उनकी शिक्षा–दीक्षा का प्रबन्धा करना चाहिए ताकि उनकी अभिरूचि एवं रूझान बना रहे। इसके लिए आवश्यकतानुसार शिक्षकों को शिक्षा सलाहकार (Educational Counsellor) से भी सलाह–मशविरा कर समस्या का समाधान करना चाहिए।

13. व्यवहार परिमार्जन– वर्तमान समय में समस्यात्मक बालक के उपचार तथा समायोजन हेतु व्यवहार, व्यवहार परिमार्जन प्रविधि का उपयोग किया जाता है। इसके अन्तर्गत बालकों के सही तथा गलत व्यवहारों के बीच फर्क कर के बताया जाता है। अतः बालकों के गलत व्यवहारों क ो अपेक्षित तथा सही व्यवहारों को पुनर्वलित किया जाता है।

14. बालक में उत्तरदायित्व की भावना का विकास–यदि बालक में उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया जाए तो उसका समस्यात्मक व्यवहार उस भावना के विकास के साथ–साथ कम हो सकता है।

Conclusion– उपरोक्त विषय के संदर्भ में कहना है कि इसप्रकार आदि अनेक सुधारात्मक समस्या का निदान सम्भव हो सकता है। इसप्रकार, समस्यात्मक बालकों की शिक्षा एवं समायोजन की दिशा में उपरोक्त सभी बातें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।हम कह सकते हैं कि समस्यात्मक बालकों के कारण को जानकर माता–पिता, शिक्षकों तथा समाज के सभी व्यक्तियों को उसका समुचित उपचार या समायोज न करना चाहिए ताकि वह समाज के सामान्य सदस्य के रूप में रह सकें। परिवार व समाज के लोगों ने मिलकर समस्यतमक बालक को एक आदर्श बालक बनने या निर्माण करने में सहायता की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Hurlock] E-B- ¼1974½ Child Development-
2. Baker] H-J- ¼1959½ Introduction of EÛceptional Children
3. UGC Net Tutor ÞEra Arihant Publication ¼India½Ltd

*****